JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सामाजिक सरोकार एवं राजनीतिक परिदृश्य में मीडिया की भूमिका

डॉ.रेखा शुक्ला
प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय
जिला छतरपुर पिन 471001 (म. प्र.)

आशाराम प्रजापति
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय
जिला छतरपुर पिन 471001 (म. प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र मीडिया के सामाजिक सरोकार एवं राजनीतिक परिदृश्य से संबंधित है। मीडिया आज के समाज में बहुत रचनात्मक भूमिका निभा रहा है। मीडिया उभरती दुनिया में समाज को जागरूक करने, संवेदनशीलता बढ़ाने और लोगों को नेतृत्व और शासन की जानकारी प्रदान करने में मदद करता है। मीडिया संचार का सबसे शक्तिशाली साधन है, जो कि जनमानस में सूचनाओं की पहुंच एवं जागरूकता बढ़ाता है और समाज के वास्तविक मंच को प्रस्तुत करता है। पिछले 15 वर्षों में मीडिया के स्वरूप में बहुत तेजी से बदलाव हुआ है। बाजारीकरण, उदारीकरण, वैश्वीकरण एवं विकसित तकनीकी व प्रौद्योगिकी के इस माहौल में मीडिया के सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ-साथ राजनीतिक परिदृश्य में भी बदलाव देखने को मिल रहा है। इस पत्र में मीडिया के सामाजिक सरोकार एवं राजनीतिक परिदृश्य के साथ-साथ समसामयिक चुनौतियों का भी अध्ययन किया गया हैं।

संकेत शब्द- मीडिया, सामाजिक सरोकार, राजनीतिक परिदृश्य, सोशल मीडिया, जनमीडिया।

प्रस्तावना- मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता हैं,जिसका संबंध सूचनाओं को संकलित और संपादित कर जनसमूह तक पहुंचाने से है। मीडिया ने अपने प्रसार में कई रूपों को शामिल किया है, प्रिंट मीडिया से लेकर रेडियो, टीवी, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के रूप में अपनी प्रगति में सोशल मीडिया को शामिल कर और अधिक उन्नत किया है। आज लोग इंटरनेट पर उपलब्ध किसी भी जानकारी से बस एक कदम की दूरी पर हैं।

मीडिया के विभिन्न रूप हैं, जो हमारे समाज को सूचना देने, शिक्षित करने और मनोरंजन करने में मदद करते हैं। मीडिया की मदद से श्रोता और दर्शक न केवल अपडेट होते हैं, बल्कि यह वर्तमान घटनाओं की समझ भी पैदा करती है। इस प्रकार मीडिया का समाज पर व्यापक प्रभाव इन दिनों आसानी से देखा जा सकता हैं।

सोशल मीडिया इन दिनों संचार का सबसे लोकप्रिय और सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला माध्यम बनता जा रहा है। सोशल मीडिया ने अलग-अलग क्षेत्र के अलग-अलग लोगों को एक साथ मंच पर ला दिया है, जिस पर वे

अपनी भावनाओं, विचारों, सूचना और बहुत कुछ को साझा कर सकते हैं। जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर, शेयर चैट आदि कई सोशल नेटवर्किंग साइट आज मौजूद हैं, जो एक ही मंच पर विचारों, दृष्टिकोण और सूचनाओं को साझा करने के द्वार खोलते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ दुनिया एक दूसरे के करीब आ गई हैं। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में स्वतंत्र मीडिया का होना बहुत जरूरी है, क्योंकि मीडिया किसी विशेष राजनीतिक पार्टी के प्रति झुकाव रखता है या सरकार का पक्षधर है, तो यह जनमानस को भ्रमित कर सकता है।

उद्देश्य– मीडिया की भूमिका का अध्ययन करना, विशेष रूप से सामाजिक सरोकार और राजनीतिक परिदृश्य के माध्यम से, हमारे समाज और राजनीतिक प्रक्रिया में कैसे असर डालता है। इस अध्ययन से हमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण पहलुओं का पता चलता है:

सामाजिक परिवर्तन: मीडिया के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन कैसे लाया जा सकता है, यह दर्शाता है। वहाँ जागरूकता, शिक्षा, सामाजिक विचारों में परिवर्तन आदि हो सकता है।

राजनीतिक प्रक्रिया पर प्रभाव: मीडिया का सामाजिक सरोकार पर कैसा असर होता है और यह राजनीतिक प्रक्रिया को कैसे प्रभावित करता है, इसे समझना जरूरी होता है।

मीडिया के उपयोग की महत्ता: मीडिया का सही उपयोग कैसे सामाजिक सरोकार और राजनीतिक परिदृश्य में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह अध्ययन हमें बताता है।

जनता के विचारों का माध्यम: मीडिया जनता के विचारों को बदल सकता है और उन्हें नेताओं और राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदार बना सकता है।

दृष्टिकोण बदलना: एक अच्छी मीडिया भूमिका सामाजिक सोच और राजनीतिक प्रक्रिया के लिए नई दिशा दे सकती है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।

मीडिया की भूमिका का अध्ययन हमें समाज की सोच में परिवर्तन लाने और एक सकारात्मक समाज की दिशा में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

शोध प्रविधि -प्रस्तुत शोध पत्र मीडिया की भूमिका का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक आंकड़ों के लिए अवलोकन विधि तथा द्वितीय आंकड़ों के लिए पुस्तकों, लेखों, समाचार पत्रों,शोध जर्नल,वेबसाइट आदि का अध्ययन किया गया है।

मीडिया के सामाजिक सरोकार- अपनी शुरुआत के समय में भारतीय मीडिया हमारे देश में एक मिशन के रूप में जन्मी थी, जिसका उद्देश्य सामाजिक चेतना को और अधिक जागरूक करने का था। तब देश में गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे युवाओं को देखा गया। तब के पत्रकारों को ना यातनाएं विचलित कर पाती थी, न धमकियां। आर्थिक कष्टों में भी जनता को जगाने का कार्य किया। स्वाधीनता की पृष्ठभूमि में संघर्ष और देश की आजादी के लिए लोगों में अहिंसा की अलख जगाने वाले महात्मा गांधी व महामना मदनमोहन मालवीय जी ने भी अपनी कलम से जनता को जगाने का काम किया। तब मीडिया के मायने थे, देश की आजादी और आजादी के बाद देश की समस्याओं का निराकरण के लिए अंतिम दम तक संघर्ष करना।

पिछले 15 वर्षों में मीडिया के स्वरूप में बहुत तेज बदलाव देखने को मिला है। सूचना क्रांति एवं तकनीकी विस्तार के चलते मीडिया की पहुंच व्यापक हुई है। इसके समानांतर भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं बाजारीकरण की प्रक्रिया भी तेज हुई है, जिससे मीडिया अछूता नहीं है। नए-नए चैनल नए- नए अखबार एवं पत्रिका निकाली जा रही हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया विस्तार के बावजूद यह सब सामाजिक सरोकारों से दूर होता जा रहा है। "भारत में मीडिया की भूमिका विकास एवं सामाजिक मुद्दों से अलग हटकर नहीं हो सकता, लेकिन यहां मीडिया विपरीत भूमिका में आ चुका है। शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी, बेरोजगारी, विस्थापन जैसे प्राथमिक मुद्दे से हटकर उत्पादक, उत्पाद और उपभोक्ता खबरों को फोकस किया गया है"

हाशिए पर चले गए जिन वर्गों की पक्षधरता और जिन मूल्यों की रक्षा की अपेक्षा मीडिया से की जाती है। उनसे मीडिया ने पल्ला झाड़ लिया है। इस दौर में गरीब-अमीर की खाई ही नहीं बढ़ी है, बल्कि भाषा, संस्कृति और मूल्यों के साथ-साथ सबसे बड़ा संकेत विश्वसनीयता को लेकर खड़ा हुआ है। मीडिया ने जन सरोकारों से दूरी बना कर सर्वाधिक निराश किया है। किसानों, मजदूरों दलितों, आदिवासियों को खबरों से बाहर कर दिया गया है। हमें बच्चों के कुपोषण से मरने की चिंता नहीं है। मीडिया की उपेक्षा की वजह से ही समाज के एक हिस्से में तमाम अस्मिताओ के प्रतिनिधित्व की जरूरत को लेकर स्वर उठने लगे हैं। वर्तमान समाज में मीडिया का सामाजिक जिम्मेदारियों से भटकाव नजर आता है। ऐसा भी नहीं है कि मीडिया ने सामाजिक सरोकारों को एकदम से अलग कर लिया है, लेकिन लगातार मीडिया की कई मामलों में भूमिका संदिग्ध सी लगती है, क्योंकि मीडिया अब सामाजिक सरोकारों को भूलता जा रहा है।

मीडिया का राजनीतिक परिदृश्य- जन संचार माध्यमों की स्वतंत्रता स्वायत्ता वास्तविक निहितार्थ तभी हैं, जब मीडिया और राजनीतिक के बीच वस्तुनिष्ठ स्थिति हो। वर्तमान भारतीय मीडिया की विश्वसनीयता पर लगातार सवाल उठाए जा रहे हैं। खबरों के चयन से लेकर उसकी प्रस्तुति तक पर राजनीतिक पक्षपात का आरोप लगाया जा रहा है। प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हो कोई भी इस तरह के आरोपों से अछूता नहीं है। सूचनाएं उसी रूप में परोसी जा रही हैं जो मीडिया घराने के लिए पूंजी लगाने में सहायक हो। और पूंजी के इसी प्रवाह को बनाए रखने के लिए मीडिया उद्योग का राजनीतिक दलों की ओर झुकाव देखा जा रहा है। राजनीतिक दलों से ये नज़दीकियां खबरों के स्वरूप को प्रभावित करती ही हैं, कभी-कभार मीडिया हाउसों को राजनीतिक दलों के एजेंडे को बढ़ाने के लिए काम करना पड़ता है।

औद्योगिक संस्कृति का मूल यह हैं, कि सिर्फ लाभ कमाना, वही मीडिया इस समय कर रहा है और सामान्य सी बात हैं कि किसी भी देश में कोई उद्योग तभी बढ़ सकता है जब उसका वहां के राजनीतिक व्यवस्था से बेहतर संबंध होंगे। इस प्रकार भारतीय मीडिया अपने सरोकारों को भूलकर सरकार की एजेंडे को दिखाने लगी है। भारतीय मीडिया की राजनीतिक प्रतिबद्धता इस कदर बढ़ गई है कि अब खबरें दिखाई नहीं जाती बल्कि एजेंडा सेट किए जाते है पहले से तय होता है कि कौन- सी सूचनाएं लोगों तक पहुंचाई जाए यदि किसी सूचना के संप्रेषण से बचना मुश्किल हो तो उसे महत्वहीन मानने की कोशिश की जाती है। साथ ही यह पहले से तय होता है, कि बहस और विमर्श को किस दिशा में ले जाना है। संक्षिप्त में कहें तो भारतीय मीडिया का राजनीतिक के साथ इस तरह से ताल-मेल हो चुका है, कि लोग ये समझ ही नहीं पाते कि सूचना कहां खत्म हो रही है और राजनीति कहां से शुरू हो रही है।

मीडिया की समसामयिक चुनौतियां-

- गैर-मुद्दों को वास्तविक समाचार के रूप में पेश किया जा रहा है जबकि वास्तविक मुद्दों को दरकिनार किया जा रहा है।
- समाचारों से छेड़छाड़ की जा रही है और मुनाफे और राजनीतिक पक्ष के लिए तथ्यों को तोड़ा-मरोड़ा जा रहा है।
- फर्जी समाचार, पीत पत्रकारिता महत्वपूर्ण चिंताएं हैं जो सार्वजनिक और राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर रही हैं।
- पैड न्यूज़ व खरीद-फरोख्त के पैकेज का बढ़ता कवरेज मीडिया को मुनाफे में तब्दील कर रहा है।
- मीडिया के क्षेत्र में पूँजी, पूंजीपतियों और व्यवसाय-बुद्धि का महत्व निरंतर बड़ रहा जिसे पत्रकार और पत्रकारिता की महत्ता और प्रतिष्ठा कम हो रही हैं।
- समाचार पत्र -पत्रिकाओं का प्रकाशन और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का संचालन अब कारोबार का रूप ले चुका है।
- टी आर पी के नाम पर खबरों की जगह मनोरंजन और सनसनी खेत पैदा करने वाले तंत्र-मंत्र को दिखाया जाता हैं।
- उदाहरण के लिए, मीडिया के माध्यम से फैलाए जा रहे भय के कारण मॉब लिंचिंग और प्रवासी आबादी पर हमले हुए हैं।

सुझाव -वस्तुपरक पत्रकारिता के अभाव में समाज में सच्चाई की झूठी प्रस्तुति होती है, जो लोगों की धारणा और राय को प्रभावित करती है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि मीडिया अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को प्रभावी ढंग से और कुशलता से निभाने के लिए, मीडिया को अपनी स्वतंत्रता और संपादकीय स्वतंत्रता को बनाए रखते हुए एक अच्छी तरह से परिभाषित आचार संहिता के भीतर काम करना चाहिए। मीडिया की स्वतंत्रता की रक्षा करने और मीडिया में निवेश किए गए सार्वजनिक विश्वास को सुनिश्चित करने के लिए पेशेवर आचरण और नैतिक अभ्यास महत्वपूर्ण हैं।

जैसा कि जे एस मिल ने कहा है, हर किसी की राय सुननी चाहिए, चाहे वह पागल ही क्यों न हो, क्योंकि हर मत में सत्य का अंश होता है।आज अधिक से अधिक टी आर पी के चक्कर में चैनलों को कुछ भी परोसने से परहेज नहीं है। अपने निहित स्वार्थ के चलते समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व से किनारा करने में उनको तनिक भी संकोच नहीं होता है।

निष्कर्ष – मीडिया को सामाजिक परिवर्तन का अग्रदूत माना जाता है मीडिया ने ही समाज की कई पुरातनपंथी सोच, आडंबरों पर प्रहार करके इसके बारे में सोचने और इसके दुष्परिणामों की ओर सबका ध्यान आकर्षित करने के साथ-साथ समाज में प्रचलित कई कुप्रथाओं, धार्मिक विश्वासों, आडंबरों के प्रति हमारी धारणाओं व दृष्टिकोण को बदलने का काम भी किया है। समाज के आधुनिकीकरण में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लेकिन

समसामयिक मीडिया में सामाजिक सरोकारों की कमी दिखाई देती है क्योंकि मीडिया ने हमारे समाजिक दायरे को संकुचित करके उसे एकाकी बनाने का काम किया है।

विश्व प्रेस फ्रीडम इंडेक्स के द्वारा भारत में मीडिया की रैंकिंग 142/150 देशों में से हैं।अब समय आ गया है जब भारतीय मीडिया को कुछ आत्म-विश्लेषण की आवश्यकता है। बहुत सारे लोग, न केवल सत्ता में रहने वाले बल्कि जनता भी, यह देखने लगी है कि मीडिया लापरवाह और स्वच्छंद हो गया है और इसमें संयम बरतने की आवश्यकता है।भारत का संविधान अनुच्छेद 19 (1) (ए) के तहत गारंटी देता है, मीडिया की स्वतंत्रता भाषण की स्वतंत्रता का एक छोटा सा हिस्सा है। लेकिन कोई भी स्वतंत्रता पूर्ण नहीं हो सकती है, उस पर तर्कसंगत सीमा लगाई जा सकती है।लोगों के संबंध में मीडिया का प्राथमिक कार्य ईमानदार और निष्पक्ष तथ्यों को प्रस्तुत करना है जिससे लोगों को तार्किक राय बनाने में आसानी होगी, जो लोकतंत्र के लिए आवश्यक है। मीडिया का मुख्य उद्देश्य निष्पक्ष, सटीक, उचित भाषा और सभ्य तरीके से जनहित के मामलों पर समाचारों, विचारों, टिप्पणियों और सूचनाओं के साथ जनमीडिया की भूमिका निभाना चाहिए। मीडिया का ऐसा प्रभाव है कि यह किसी व्यक्ति, संस्था या किसी विचार को बना या बिगाड़ सकता है। इसलिए मीडिया को अपना कार्य बड़ी ही जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए। मीडिया को सूचना एकत्रित करने और प्रसारित करने में कुछ नैतिकता का पालन करना अनिवार्य है। जैसे- समाचारों की प्रमाणिकता सुनिश्चित करना, रिपोर्टिंग में निष्पक्षता बनाए रखना, संयमित और सामाजिक रूप से स्वीकार भाषा का प्रयोग आदि।

संदर्भ –

1 डॉ. नीलिमा सिंह "भारतीय लोकतंत्र और मीडिया एक विश्लेषण" शोध मंथन जून 2017 पेज संख्या 69- 74

2 परिहार कालूराम (2008) मीडिया के सामाजिक सरोकार नई दिल्ली अनामिका पब्लिकेशन एवं डिस्ट्रीब्यूटर दरियागंज प्रथम संस्करण पृष्ठ - 22

3 https://www.scotbuzz.org/2021/०/media. m=/

4 http://www.mediamorcha.com/enteries//

5 Reporters without borders Report Press freedom index 2022

5 "मीडिया और हिंदी: बदलती प्रवृत्तियां" रविंद जाटव,केशव मोरे वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण प्र. स.-165

6 प्रोफेसर राम लखन मीणा (प्रयोजनमूलक मीडिया विमर्श सिद्धांत और अनुप्रयोग) केके पब्लिकेशंस दरियागंज नई दिल्ली

7 राकेश प्रवीर (मीडिया का वर्तमान परिदृश्य)ज्ञान गंगा दिल्ली संस्करण प्रथम 2020